षष्ठ अध्याय

उपसंहार

उपसंहार

सृष्टि के प्रारंभ से नारी और पुरूष का सम्बन्ध अन्योन्याश्रित रहा है । नारी पुरूष की शक्ती एवं प्रेरणा है । समाज विकास का दायित्व इन दोनों पर समान रूप से निर्भर है । पुरूष की तरह नारी भी मानव समाज का महत्वपूर्ण अंग है । फिर भी समाज के पुरूष परम्परानुसार नारी को हेय समझकर उसका शारीरिक, मानसिक शोषण करके उसे भोग्या बनाते है तथा नारी को बेबस, लाचार एवं घृणित जीवन बिताने के लिए बाध्य कर देते है । समाज में नारी को उपेक्षा एवं अवमान ही मिलता है । ऐसे ही नीच एवं भोग्या बनी हुई नारियों के दर्दनाक जीवन जीवन का चित्रण डॉ. रांगेय राघव ने अपने आलोच्य उपन्यास ' कब तक पुकारूँ ' और ' मुर्दो का टीला ' में किया है ।

डॉ. रांगेय राघवजी का जन्म ' वैर ' गाँव के सुसम्पन्न एवं सुसंस्कृत राघव परिवार में 17 मई, 1923 में हुआ । उनका बचपन मौज मस्ती में बीता । ' वीर राघव ' उनका बाल्यकाल का नाम है तथा ' रांगेय राघव ' उनका साहित्यिक नाम है । उन्होंने सन् 1948 में आगरा विश्वविद्यालय में पीएच. डी. जैसी उच्चतम उपाधि को हासिल किया । 7 मई 1956 में सुलोचना जी के साथ राघवजी विवाहबद्ध हुए । सुलोचनाजी ने ' सीमान्तिनी ' नामक बेटी को जन्म दिया । उनका वैवाहिक एवं पारिवारी जीवन सन्तोषपूर्ण रहा । किन्तु राघवजी का शरीर कई बीमारियों से जर्जर बना तथा कैन्सर जैसी जानलेवी बीमारी के कारण उनके परिवार पर दुःख की छाया मँडराने लगी । अतः उनका जीवन अधिकतर दुःखों मे बीता ।

डॉ. रांगेय राघव का व्यक्तित्व विविध पहलुओं से सजा हुआ प्रभावशाली एवं आकर्षक था । उनका स्वभाव मिलनसार, सरल, उदार, स्वाभिमानी और संवेदनशील था । वे सदा हँसमुख

रहकर हँसी मजाक करते थे । लेकिन वे प्रखर स्पष्टवादी थे । लेखन - पठन के बावजूद संगीत, रेस्त्रांबाज, प्रकृति की गोद में रहना तथा घूमना, चित्रकारी, शतरंज एवं बैडमिन्टन खेलना, इतिहास चिन्तान, पुरातन शिलालेखों की खोज आदि में विशेष रूचि थी । वे अंधविश्वास तथा प्रदर्शन के खिलाफ थे । राघवजी नारी स्वतंत्रता के आग्रही थे । इसलिए तो उन्होंने विवाह के पश्चात् अपनी पत्नी को शिक्षा दिलाकर स्वावलंबी बनाया ।

डॉ. रांगेय राघवजी बहुमुखी तथा सजग साहित्यकार थे । उनके व्यक्तित्व का प्रभाव उनके साहित्य पर भी रहा है । एक सफल साहित्यकार होने के नाते जन-जागृति, समाज का ज्ञानार्जन, समाज परिवर्तन आदि का दायित्व उनपर था । अतः उन्होंने अपने दायित्व का पूरी तरह निर्वाह किया है । प्रकृति, परिवार, समाज तथा समाज का शोषित, पीड़ित, सर्वहरा वर्ग आदि द्वारा प्रेरित होकर राघवजी ने साहित्य सृजन किया । हिन्दी उपन्यास साहित्य में उन्होंने यथार्थ वर्णन किया है । उनकी अधिकतर साहित्य कृतियाँ शोषित नारी जीवन से सम्बन्धित है । 2 सितंबर 1962 में उनकी साहित्य यात्रा हमेशा के लिए समाप्त हो गयी । सन 1966 में भारत सरकार ने उनके मरणोपरान्त उन्हें ' महात्मा गांधी ' पुरस्कार से सम्मानित किया ।

राघवजी का ' कब तक पुकारूँ ' उपन्यास आँचलिक उपन्यास है । आँचलिक उपन्यास में किसी उपेक्षित ग्राम या भूखण्ड तथा वहाँ के लोक जीवन का चित्रण रहता है, तो कभी-कभी शोषित, पीड़ित, बहिष्कृत जातियों का चित्रण भी किया जाता है । इस उपन्यास में राघवजी ने राजस्थान जिला भरपतुर के ' वैर ' ग्राम और उसके आसपास निवास करनेवाले सुसंस्कृत समाज द्वारा उपेक्षित करनट जाति के समग्र जीवन का चित्रण किया है । करनट सुखराम राघवजी को अपनी आप-बीती सुनाता है और इसी आप-बीती को उन्होंने एक शृंखला के रूप में उस जाति का यथार्थ रूप पाठकों के सामने पेश किया है । बदलते वक्त के साथ-साथ इन जातियों के जीवन में कुछ मात्रा में बदलाव हुआ है, उनके लिए कानून बनवाये हैं । लेकिन आज भी उनको दम्न एवं शोषण के पाटों के बीच पिसा जा रहा है, तथा उन्हें अछूत समझा जा रहा है । अतः राघवजी ने

इस बात को स्पष्ट करने के लिए करनट जाति को आधार बनाया है । ' मुर्दो का टीला ' ऐतिहासिक उपन्यास है । ऐतिहासिक उपन्यास में ऐतिहासिक तथ्य, पात्र, उनका वार्तालाप, वेशभूषा, वातावरण, सृष्टि आदि बातें महत्वपूर्ण होती है । इन्हीं बातों पर ही ऐतिहासिक उपन्यास की सफलता निर्भर रहती है । इसलिए ऐतिहासिक उपन्यासकार को विशेष सावधानी बरतनी पड़ती है । प्राचीन कालीन चीजों को देखकर तत्कालीन समाज व्यवस्था का हम अन्दाज लगा सकते हैं क्योंकि उस काल में इतिहास लिखने की सुविधा नहीं थी । मोअन - जो - दड़ो महानगर के बारे में ऐसा ही हुआ था । मोअन - जो - दड़ो जैसा सुसम्पन्न महानगर अस्तित्व में था इस बात से लोग अन्जान थे । लेकिन भूगर्भवित्ता के संशोधन एवं अन्वेषणों के फलस्वरूप तत्कालीन कुछ अवशेष मिले जिसके आधार पर मोअन - जो - दड़ो की संस्कृति को जानने का प्रयास किया गया । मोअन - जो - दड़ो की द्रविड़ी सभ्यता, महानगर की सुव्यवस्था , दास-प्रथा, गणतंत्रात्मक शासन प्रणाली, पूँजीवादी लोगों की धन एवं काम लिप्सा, सत्ता, अधिकार की अधिक लालसा मनुष्य को समाप्त कर देती है तथा प्रकृति भी मनुष्य की शोषणवृत्ति, अत्याचारों को बर्दाश्त नहीं कर सकती । प्रकृति स्वयं विद्रोही बनकर शोषण को समाप्त कर देती है आदि कई बातें स्पष्ट हो गयी है । राघवजी ने महसूस किया है कि आज भी उस युग की तरह सामन्तवादी लोग सत्ता, धन के लिए गरीबों का शोषण करते हैं तथा उनकी कामपिपासू वृत्ति के कारण कई निःसाहाय नारियों का जीवन बरबाद कर देते हैं । अतः राघवजी ने इस सत्य तथा तत्कालीन कुछ अवशेषों के आधार पर ' मुर्दो का टीला ' बृहतकाय उपन्यास का भवन खड़ा किया है । इसमें उन्होंने महानगर की सभ्यता, शासन प्रणाली, संस्कृति, प्रथा - परम्पराएँ तथा दास जीवन आदि का यथार्थरूप में चित्रण किया है । और समाज के शोषक वर्ग को सचेत कर दिया है ।

राघवजी के विवेच्य उपन्यास ' कब तक पुकारूँ ' और ' मुर्दो का टीला ' सोद्देश्यपूर्ण है । ' कब तक पुकारूँ ' का प्रमुख लक्ष्य है - राजस्थान के खानाबदोश जरायमपेशा करनटों ज्योंकि अनपढ़, गँवार और समाज के द्वारा उत्पीड़ित, उपेक्षित है, उनके जीवन के यथार्थ रूप से पाठकों को परिचित करना तथा ऊँच-नीच जातियों का वर्ग संघर्ष एवं उनके आर्थिक, मानसिक, शारीरिक शोषण के फलस्वरूप उनकी सामाजिक मान्यताओं को प्रस्तुत करना । साथ-ही-साथ उनकी

औरतों का घृणित जीवन, अन्य जातियों का चित्रण तथा सामन्तवादी सुख-सुविधापूर्ण जीवन की कामना करनेवाले लोगों की मानसिकता की हार इस सत्य को प्रस्तुत करना । ' मुर्दो का टीला ' उपन्यास का उद्देश्य है - ऐतिहासिक उपन्यास का निर्माण, वर्तमान की सद्यःस्थिति, समस्याओं के समाधान के लिए अतीत में झाँकना, ऐतिहासिक सीमाओं में रहकर मार्क्सवादी दर्शन को प्रस्तुत करना तथा मोअन - जो - दड़ो की समाजव्यवस्था, दासप्रथा एवं दासी नारियों का सामन्तवादी लोगों द्वारा शोषण, उनकी घुटनभरी जिन्दगी, गणतंत्रात्मक शासन प्रणाली आदि को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करना । अतः इस उपन्यासों के कथ्य की स्पष्ट अभिव्यक्ति के लिए राघवजीने कथ्य को बृहत कथानक में सूत्रबद्ध कर दिया है । कथानक प्रमुखतः दो प्रकार का होता है - अधिकारिक कथा और प्रासंगिक कथा । आलोच्य उपन्यासों के कथानक में ग्रामीण तथा ऐतिहासिक जीवन का यथार्थ चित्रण किया है । ' कब तक पुकारूँ ' का कथानक पैतीस सर्गो में विस्तारित किया गया है । प्यारी, सुखराम, कजरी, रूस्तुमखाँ की कथा मुख्य कथा के साथ बेला, धूपो चमरिन, सौनो, चंदा, नरेश, डाकू खड़गसिंह, चंदन मेहतर, करनटों के राजा, सूसन - लॉरेन्स, आदि की प्रासंगिक कथाओं में से कुछ कथाएँ अनावश्यक है । फिर भी मुख्य कथा के विकास के लिए ये गौण कथाएँ सहायक बनी हैं । प्यारी, कजरी, सुखराम की कथा के माध्यम से निम्नवर्ग की सहनशीलता, शोषण को स्पष्ट किया है । ' मुर्दो का टीला ' उपन्यास चौबीस भागों में विभाजित किया है । यह कथानक पूर्णतः काल्पनिक है । लेकिन जिस ढंग से ये लिखा है उससे कथानक यथार्थ लगता है । श्रेष्ठि मणिबन्ध, विल्लिभित्तुर, नीलूफर, हेका, अपाप की कथा प्रधान है तथा वेणी, चन्द्रा, आमेन - रा, अक्षय प्रधान, वीणा, मोअन - जो - दड़ो की गण परिषद, कीकट, मिश्र, आदि की कथाएँ प्रासंगिक हैं । उपन्यासकार ने उपन्यास के बीच में चमत्कारिक घटनाओं एवं कथाओं का समावेश करके कथानक को विकसित किया है । गायक विल्लिभित्तुर के माध्यम से उपन्यासकार ने साम्राज्यवाद, दास-प्रथा का विरोध किया है । तथा नारी स्वतंत्रता, गणतंत्रात्मक शासन प्रणाली की स्थापना की कामना की है । अतीत के संदर्भ में वर्तमान पर प्रकाश डाला है । अतः प्यारी, कजरी, चंदा, सुखराम (कब तक पुकारूँ), नीलूफर, हेका , अपाप, गायक (मुर्दो का टीला) आदि के सहारे उपन्यासकार ने यह बताया है कि निम्नवर्ग के लोगों में भी मानवता होती है । अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए आन लोगों की तरह वे भी इज्जत से जीना चाहते हैं तथा जीवन के प्रति आस्था बनाये रखते हैं ।

और वासनिक प्रेम को मानसिक तथा शाश्वत रूप दिया है । अतः आलोच्य उपन्यासों का कथानक क्रमबद्ध, मौलिक, रोचक, प्रभावात्मक एवं यथार्थ है ।

प्रस्तुत उपन्यासों में चित्रित जन -जातियों के सांस्कृतिक जीवन यापन में रूढ़ि-प्रथा-परम्पराएँ, उत्सव- त्यौहार, लोकगीत, लोककथा, मनोरंजन के साधन आदि बातों को समाविष्ट किया गया है । ये लोग इनके प्रति अपने मन में श्रद्धा भाव रखते है । रोज की भागदौड़ घुटनभरे जीवन से ऊबकर लोग कुछ समय के लिए मानसिक शांति पाना चाहते है । इसके लिए वे मनोरंजन करते हैं तथा उत्सव-त्यौहारों को मनाते हैं । लोकथाओं के द्वारा तत्कालीन जन-जीवन एवं समाज व्यवस्था की जानकारी प्राप्त की जाती है । लोकगीतों के माध्यम से लोग अपने मन की वेदना, दर्द, पीड़ा को अभिव्यक्त करते हैं । किन्तु कुछ रूढ़ि, प्रथा-परम्पराएँ नारी जाति के लिए पीड़ादायक होती है तथा नारी की स्वतंत्रता पर अंकुश लगा सकती है । सामाजिक जीवन यापन के अन्तर्गत देवी-देवता सम्बन्धी मान्यताएँ, व्यवसाय एवं आर्थिक स्थिती, वेशभूषा एवं खान-पान, अंधविश्वास, जातीय भेदभावना, बोलचाल आदि का समावेश किया है । ये लोग अपने आराध्य देवताओं के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं तथा उनके प्रति श्रद्धा रखते हैं । लेकिन देवी-देवताओं सम्बन्धी मान्यताएँ और अंधविश्वास आदि के द्वारा अशिक्षित नारी जाति का निर्भयता से शोषण किया जाता है । निम्नवर्ण अशिक्षित होने के कारण इन लोगों को आर्थिक प्रगति के लिए गैर कानूनी काम (चोरी, डकैती) करने पड़ते है तथा उनकी महिलाओं को तन विक्रय का व्यवसाय करने के लिए विवश होना पड़ता है । नीच एवं अछूती जातियों का सामाजिक जीवन दर्दनाक, घृणित एवं बेबस है । ऊँची जाति के लोग उनको कीड़े मकौड़े समझकर पैरो तले कुचल देते हैं तथा उनपर अत्याचार करते हैं । ' जात ' ही मनुष्य - मनुष्य में दीवार बन जाती है तथा जुल्म का साधन बनती है । जातीय भेदाभेद मनुष्य जाति के लिए कलंक है । आलोच्य जन - जातियों की बोलचाल, वेशभूषा, खान-पान उन लोगों की संस्कृति, आर्थिक स्थिती, भौगोलिक परिवेश पर निर्भर है । अतः राघवजी ने प्रस्तुत उपन्यासों के कथ्य को कथानक द्वारा स्पष्ट किया है तथा उन लोगों की सभ्यता, संस्कृति एवं सामाजिकता के आधार पर जनजीवन पद्धति को अंकित किया है ।

राघवजी के विवेच्य उपन्यासों में चित्रित तेरह नारी पात्रों के अध्ययन के पश्चात् यह स्पष्ट होता है कि राघवजी के प्रस्तुत नारी पात्र निम्न वर्ग के हैं । उनके चरित्र - चित्रण द्वारा चरित्रगत विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है । प्यारी, कजरी, चंदा, बेला, सूसन, (कब तक पुकारूँ), नीलूफर, हेका, वेणी, वीणा, चन्द्रा, षोड़शी (मुर्दो का टीला) ये नारियाँ अपनी रक्षा के लिए मरते दम तक संघर्ष करती है । वे जानती है कि धन ही गुलामी की जड़ है । अतः उन्हे विलासी जीवन आकर्षित नहीं करता । विपरित परिस्थिती में भी वे हिम्मत नहीं हारती । ये नारियाँ दास्यत्व और शोषण के खिलाफ और अपने अधिकार प्राप्ती के लिए सजग और स्वतंत्रता प्रेमी हैं तथा स्वच्छन्द जीनेवाली हैं । अपनी अस्मिता, अस्तित्व के प्रति ये नारियाँ जागृत हैं। उनके चरित्र के महत्वपूर्ण पहलु है - स्वाभिमान, आत्मगौरव, आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता, निर्भयता आदि । इनकी रक्षा के लिए ही मरते दम तक ये नारियाँ संघर्ष करती है । नीलूफर (मुर्दो का टीला) श्रेष्ठि मणिबन्ध के वैभव को ठुकरा देती है, धूपो (कब तक पुकारूँ) बाँके के प्रणय निवेदन का विरोध कर, प्यारी (कब तक पुकारूँ) रूस्तमखाँ की हुकूमत को छोड़कर, चन्द्रा (मुर्दो का टीला) अपना राजविलास एवं माता-पिता को त्यागकर यह बात साबित कर देती है । पैसा और सत्ता के बलपर पुरूष द्वारा नारी को खरीदना यह बात नीलूफर बर्दाश्त नहीं करती । रूस्तुमखाँ द्वारा अपमानित होने पर प्यारी उसे फटकारती है । कजरी (कब तक पुकारूँ) अभावों मे भी आत्मसंतुष्ट रहती है । इन नारियों का स्वाभिमान अद्वितीय है । ये नारियाँ निर्भीक, सहनशील तथा अदम्य साहसी है । अनेक कठिनाइयों, मानसिक, शारीरिक यातनाओं के बावजूद भी इन नारियों के मन में जीवन की आसक्ति बनी रही है । वे स्त्री - पुरूष समानता के आग्रही है और किसी के हाथों की कठपुतली बनना स्वीकार नहीं करती । ये नारियाँ विद्रोहिणी हैं । सामन्तवादी लोग इन्हे हीन चीज समझकर उनका शारीरिक, मानसिक शोषण करते हैं तथा उनपर जुल्म - अत्याचार भी करते हैं । पक्षपाती समाजव्यवस्था एवं मान्यताओं का विरोध, मानवीय ढंग से सम्मानपूर्ण जीने के लिए शोषण के दमनचक्र एवं दासता से हमेशा - हमेशा के लिए मुक्ति पाने के लिए, समस्त नारी जाति के हक और अधिकार प्राप्ति एवं स्वतंत्रता के लिए ये नारियाँ जीवन के रणक्षेत्र में विद्रोह एवं क्रान्ति करती है । प्यारी, कजरी (कब तक पुकारूँ) रूस्तमखाँ और बाँके का खून कर देती है । नीलूफर (मुर्दो का टीला) श्रेष्ठि मणिबन्ध के साथ संघर्ष करती है । इन

नारियों मे शोषितों के प्रति सहानुभूती है तथा बुद्धिचातुर्य भी है । ये नारियाँ अपने जीवन में परिवर्तन लाना चाहती है तथा अपने ढ़ंग से परिवर्तन भी कर लेती है । कजरी (कब तक पुकारूँ) सुखराम के साथ पुर्नविवाह कर लेती है, प्यारी कजरी को मौत के रूप में स्वीकार करती है । चँदा अपने पति नीलू करनट को हमेशा के लिए छोड़ देती है, नीलूफर (मुर्दो का टीला) गायक विल्लिभित्तुर को अपनाती है, राजकुमारी चंद्रा आम नारी की भाँति मुसीबतों का सामना करती है । इन नारियों के चरित्र सशक्त एवं प्रभावशाली है । सुखराम के चरित्र पर प्यारी, कजरी का प्रभाव दिखाई देता है तथा नीलूफर विल्लिभित्तुर के चरित्र को प्रभवित करती है । ये नारियाँ पीड़ा, यातना एवं दु:खों को महसूस करती है तथा इनमें मानवीयता, यथार्थता है । इसलिए वे पाठकों के दिलों दिमाग पर छा जाती है । इनकी कमजोरियाँ, इच्छा - आकांक्षाएँ मानवीय है । जीवन संघर्ष में वे मिट जाती हैं । किन्तु मृत्यु इनकी त्रासदी की ओर संकेत करती है । राघवजी का नारी पात्रों का निर्माण सोद्देश्य है ।

राघवजी के विवेच्य उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन की समस्याओं के अवलोकन के पश्चात् इस बात की ओर संकेत किया गया है कि प्रस्तुत नारियाँ समाज का अंग होते हुए भी अशिक्षित एवं नीच जाति की होने के कारण समाज के लोग उनकी ओर सिर्फ ' कामुक ' दृष्टि से देखते हैं । किन्तु उन नारियों के विविध रूपों को नहीं पहचानते । अत: इन नारी जीवन की समस्याओं का स्वरूप एवं मूल पुरूष जाति की ' अहंभावना ' तथा कामपिपासू वृत्ति, नीच जाति आदि से सम्बन्धित रहा है । अधिक से अधिक आर्थिक प्राप्ती एवं कामपूर्ति के लिए पुरूष अनेक विवाह करते हैं । परिणामस्वरूप नारी के मन में घुटन पैदा होती है । और इस कारण बहु-विवाह तथा सौतियाँ डाह की समस्या में नारी ही नारी का शोषण करती है । चंदन मेहँतर (कब तक पुकारूँ) पाँच बार विवाह करता है । उसकी औरतें आपस में झगड़ती है । सुखराम प्यारी के होते हुए भी कजरी के साथ विवाह करता है जिससे प्यारी और कजरी मन-ही-मन में तड़पती है । सामन्तवादी पुरूष की स्वैर वासना एवं अहं के कारण नारी को रखैल समस्या तथा बलात्कार एवं कुँवारी माता आदि समस्याओं ने ग्रस्त किया है । वेणी (मुर्दो का टीला), प्यारी (कब तक पुकारूँ) आदि रखैल नारियाँ हैं । उनका अन्त दु:खदायक हुआ है । धूपो, सूसन

(कब तक पुकारूँ) बलात्कारिक नारियाँ हैं जो अपने जीवन से मुँह मोड़ लेती है । यौन शोषण का शिकार बनी हुई सूसन गर्भवती रहती है तथा उसके परिवार में उसके कुंवारी मातृत्व को लेकर चिन्ता बनी रहती है । समाज में प्रचलित कुछ रीति-रीवाज भी इन नारियों के लिए समस्या बन जाते हैं, जैसे देवी - देवताओं को प्रसन्न करके अपनी मनोकामना पूरी करने के लिए लोग नारी का इस्तेमाल करके उसके साथ बेरहमी से पेश आते हैं । चंदन मेहँतर (कब तक पुकारूँ) अपनी पाँचवी बीबी को इसके लिए आलम्बन बनाता है । ' मुर्दो का टीला ' में मोअन - जो - दड़ो महानगर के ग्रामीण भागों से गाँव की सुसम्पन्नता के लिए योगियों द्वारा नारी का निर्ममता से शारीरिक शोषण करके बलि दी जाती है । अनमेल विवाह की समस्या भी कुरीति का परिणाम है । परम्परानुसार माँ-बाप अपने सन्तान का विवाह तय करते है । किन्तु इसमें दोनों की राय नहीं पूछते जिसमें उनका वैवाहिक जीवन दु:खदायक बन जाता है । कुर्री और कजरी तथा चन्दा और नीलू (कब तक पुकारूँ) का विवाह अनमेल है । समाज में विधवा नारी का कोई मूल्य नहीं होता तथा समाज उसकी ओर हीन दृष्टी से देखता है । उसे हर तरह कमजोर करने की कोशिश की जाती है । अत: विधवा होना भी नारी के लिए एक समस्या है । धूपो, सौनो (कब तक पुकारूँ) विधवा नारियाँ है, इनका जीवन लान्छनास्पद है । प्रस्तुत निम्न वर्ग की नारियाँ आत्मनिर्भर हैं । आत्मनिर्भर बनने के लिए साधन के रूप में उनके पास शरीर है । इसी कारण दैहिक विक्रय नारियों के लिए समस्या बन जाती है । प्यारी (कब तक पुकारूँ) यौन बीमारी का शिकार हो जाती है । विवेच्य सभी नारियाँ आर्थिक प्राप्ती के लिए अन्य कामों के बावजूद दैहिक विक्रय करती है । सिर्फ धूपो और सूसन (कब तक पुकारूँ) इसके लिए अपवाद है । धूपो खेती तथा गोबर के काण्डे बनाकर जीवन यापन करती है । इन नारियों के स्वच्छंद शरीर विक्रय से उनके पति-पत्नी के रिश्तों में समस्या निर्माण होती है । प्यारी का तन बाँटना सुखराम बर्दाश्त नहीं कर पाता, अपाप हेका के शील की रक्षा नहीं कर सकता, बेला और उसके पति में भी झगड़ा होता है । इन नारियों की प्रमुख समस्या दास्यत्व की है । उनके न माता-पिता है न खानदान का । इसलिए वे नारियाँ निम्न वर्ग की है । पूँजीवादी पुरूष धन के बल पर उनका किसी वस्तु की तरह क्रय-विक्रय करते हैं । नारी जाति का घृणित रूप दासी है । ' मुर्दो का टीला ' की सभी नारियाँ दासी वर्ग की है । अत: उनका जीवन यातनाओं से भरा है । ये नारियाँ निड़र

एवं निर्भय हैं । किसी भी हालत में वे जीवन को समाप्त नहीं करना चाहती । किन्तु पुरूष की अहं वृत्ति तथा समाज की अवहेलना नारी को आत्महत्या की ओर ले जाती है । बेला (कब तक पुकारूँ) पारिवारिक संघर्ष, समाज की उपेक्षा से बचने के लिए मौत को गले लगाती है । अतः राघवजी आलोच्या उपन्यास की भिन्न जाति के नारियों के जीवन की समस्याओं के चित्रण में सफल हो चुके हैं । इन नारियों की समस्याओं का उपाय पूँजीवादी, सामन्तवादी समाज व्यवस्था को करना है ।

राघवजी के प्रस्तु उपन्यासों की नारियों के जीवन - दर्शन के विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि, राघवजी के आलोच्य उपन्यासों की रचनाधर्मिता तथा जीवनदृष्टि मार्क्सवादी होकर भी मूलतः मानवतावादी मूल्यों से अनुप्रेरित रही है । मार्क्सवाद का मूल उद्देश्य शोषण से मानव समाज की मुक्ति है । नारी भी शोषण से अछूती नहीं है । नारी को शोषणमुक्त करने के लिए राघवजी उन्हें संघर्षशील बनाना चाहते हैं । अतः राघवजी ने अपने आलोच्य उपन्यासों में इसी अभियान के स्वर को तथा अपनी जीवनदृष्टि को विविध नारी पात्रों द्वारा अपने ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । विवेच्य नारियाँ निम्न वर्ग एवं अछूती जाति की है । समाज में उनका कोई स्थान नहीं है । उनका होना न होना एकसमान है । इन नारियों का जीवन लाचार एवं लांछनीय है । फिर भी ऐसे पीड़ित जीवन को जीने की उनकी आकांक्षा प्रबल है । वे जीवन को उदात्त एवं लौकिक दृष्टी से देखती है । इन नारियों की प्रमुख समस्या जीवन जीने की है । इसलिए तो उनका संघर्ष चलता है । जीवन यापन के लिए वे किसी पर निर्भर नहीं रहती । कुछ मात्रा में ये नारियाँ भाग्यवादी, ईश्वरवादी है तथा मानव प्राणी का जीवन संचलन ईश्वर द्वारा होता है । इस बात को कुछ हद तक वे मानती है । लेकिन भाग्य के हाथों का खिलौना नहीं बनती बल्कि कर्मवाद पर विश्वास करके क्रियाशील रहती है । जीवन परिवर्तन में ये नारियाँ विश्वास करके अपने जीवन को मनचाहे ढंग से परिवर्तित भी कर लेती है । इसके लिए वे संघर्षशील रहती है । प्यारी, कजरी, धूपो (कब तक पुकारूँ), नीलूफर, हेका (मुर्दो का टीला) भगवान तथा भाग्य के अस्तित्व के प्रति आस्था रखती है । तथा विपरित परिस्थिती, निम्न जाति, घृणित जीवन को अपना भाग्य समझती है । इन नारियों की ओर समाज हेय दृष्टि से देखता है । पूँजीवादी पुरूषवर्ग इन नारियों को वासनापूर्ती का साधन मात्र समझकर उनका शारीरिक, मानसिक शोषण करता है । ये नारियाँ पुरूषवर्ग के स्वार्थ का शिकार बनी हुई है तथा उन्होंने स्वार्थीवृत्ति को जाना भी है । इन नारियों की मानसिकता जीवनदृष्टि समाज के परम्परागत मान्यताओं के खिलाफ है । अतः इन नारियों की मानसिकता के साथ समाज की मान्यताओं

का समंजस्य स्थापित न होने के कारण उनके लिए संघर्ष अटल हो जाता है । ये नारियाँ समाज के अन्याय, अत्याचारों का मुकाबला हिम्मत के साथ करती है । अपना जीवन वैयक्तिक, चेतना एवं निर्भयता से जीती है । प्यारी, चंदा, (कब तक पुकारूँ), वेणी, नीलूफर (मुर्दो का टीला) अपने ढंग से जीवन बीताती है । किसी के दबाव में आकर अपनी जीवनदृष्टि को बदल नहीं देती । ये नारियाँ समाज में प्रचलित नैतिक धारणाओं, ऊँच-नीचता के आधार पर होनेवाला शोषण, जुल्म का कड़ा विरोध करती हैं । इनकी यह धारणा है नैतिक, अनैतिकता के लिए कोई सीमा नहीं है । जो अपने मन को अच्छा लगे वह नैतिक और जो बूरा लगे वह अनैतिक है क्योंकि इन नारियों पर हुए संस्कार ही ऐसे हैं, इसमें कोई नैतिक अनैतिक नहीं है । नारी की यौन पवित्रता तथा पतिव्रता जैसे तथ्यों पर ये नारियाँ विश्वास नहीं करती तथा मन की पवित्रता एवं सतीत्व असल में पवित्रता के मानदण्ड मानती है । इनके विचार से मातृत्व नारी के लिए महत्वपूर्ण एवं अभिमानास्पद है । अतः वह किसी भी तरह प्राप्त हो जाये । प्यारी, कजरी (कब तक पुकारूँ), नीलूफर, हेका (मुर्दो का टीला) पतिव्रताहीन समाज में भी मन की पवित्रता के कारण आदर्श पतिव्रता नारियाँ साबित हो चुकी हैं । कजरी का मानना है बलात्कार बुरी बात है पर बच्चा होना गौरव की बात है । सूसन के साथ बलात्कार होने पर कजरी उसकी स्थिति से तड़प उठती है । किन्तु सूसन का माँ बनना कजरी के लिए खुशी की बात है । ये नारियाँ निम्न जाति की एवं दासी होने के बावजूद भी नारी हृदय के प्रेम की महत्ता को अच्छी तरह पहचानती हैं । प्रेम इन नारियों के जीवन में बहुत अहमियत रखता है। प्रेम के सहारे ही उन्हें अपना दुःखदायक जीवन बिताने की हिम्मत आ जाती है । नीलूफर (मुर्दो का टीला) प्रेम में मन के साथ शरीर का भी मिला होना आवश्यक मानती है । प्यारी, कजरी, चंदा (कब तक पुकारूँ), शरीर और मन के प्रेम को अलग - अलग तथा स्वच्छंद दृष्टि से देखती है । किन्तु त्यागभावना, एकनिष्ठता तथा परस्पर मानसिकता के कारण शरीर एवं वासना से हटकर आत्मिक धरातल पर उतर जाता है । इनका प्रेम मानसिक गहराई एवं ऊँचाई तक पहुँच जाता है । इन नारियों का प्रेम पथ यातनाओं, कठिनाईयों से भरा हुआ है तथा अन्त में उनकी परिणति मृत्यु में होती है । मौत ही उन्हें वेदना और यातनाओं से छुटकारा दिलवाती है । बेला, प्यारी, चंदा

(कब तक पुकारूँ), नीलूफर, हेका (मुर्दो का टीला) प्रेम पाकर समाप्त होती है । किन्तु अन्नय अन्य नारियाँ प्रेम की अतृप्ति में ही मिट जाती है । ये नारियाँ विवाह - व्यवस्था को अनिवार्य नहीं मानती तथा उस पर विश्वास भी नहीं करती । कजरी (कब तक पुकारूँ) विवाह को सहजबात मानती है । नीलूफर और हेका (मुर्दो का टीला) भी विवाह जैसे बाह्य संस्कारों को नहीं मानती । किन्तु प्यारी, बेला, सौनो (कब तक पुकारूँ) विवाह को आवश्यक मानती है ताकि पति ही उनके जीवन का अन्तिम सहारा है । ये नारियाँ विवाह तथा स्त्री-पुरूष सम्बन्धों के लिए दोनों की इच्छा एवं स्वीकृति को आवश्यक समझती है । वे पति को दोस्त के रूप में देखती हैं । ये नारियाँ विवाहपूर्व तथा विवाह के पश्चात् अन्य पुरूषों से यौन - सम्बन्ध स्थापना की स्वतंत्रता की माँग करती है । अर्थार्जन के लिए तन विक्रय को वे उचित मानती है । साहस एवं हिम्मत से ये नारियाँ प्रेम विवाह, समाज की धारणाएँ आदि की दीवारों को तोड़ती है । वे शोषणरहित समाज की स्थापना तथा सभी को जीने का अधिकार आदि की माँग करती है । शोषित, पीड़ित नारी वर्ग के प्रति इन नारियों के मन में सच्ची सहानुभूती है तथा उनका उद्धार एवं उनके हकों के लिए सक्रिय भी रहती है । उनका यह संघर्ष, विद्रोह समस्त शोषित नारी जाति के लिए है । और इसमें ही वे मिट जाती है । उनकी जीवनदृष्टि क्रान्तिकारी एवं भारतीय मानवतावाद के तत्वों से प्रेरित है । नीलूफर, हेका, चंद्रा (मुर्दो का टीला) प्यारी, कजरी (कब तक पुकारूँ) अंतःकरण की सच्चाई तथा शोषक वर्ग के विरूद्ध संघर्ष करके इस बात का प्रमाण देती है ।

राघवजी नारी का आदर एवं सम्मान करते थे । उनकी यह धारणा है कि नारी अबला नहीं सबला है । सामाजिक विषमता तथा पुरूष वर्ग की दासता को छोड़कर अपना दायित्व अधिकार तथा अस्तित्व के प्रति नारी को जागृत करने का प्रयास राघवजी ने किया है । उन्होंने आलोच्य निम्नवर्ग की नारियों के सत्य एवं वास्तविक तथा यथार्थरूप को दर्शाया है । इन नारियों को अपना अस्तित्व, आत्मगौरव, स्वतंत्रता एवं अधिकारों को हासिल करने के लिए जीवन की बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है । इसके लिए प्रायः सभी नारियाँ क्रियाशील एवं संघर्षशील रहती है । समाज एवं पुरूषवर्ग द्वारा पीड़ित, अपमानित होने पर भी जीवन की ओर आशावादी दृष्टिसे देखती है । शरीर

व्यापार करनेवाली इन नारियों में भी मानवता एवं मन की गहराई है । वे भी किसी को समर्पित होती हैं । कजरी (कब तक पुकारूँ), नीलूफर (मुर्दो का टीला) स्त्री - पुरूष के शारीरिक सम्बन्धों में संयम को महत्व देती है तथा संयम से वासनापर विजय पाकर पतिव्रता नारि के रूप में पुरूष से सम्बन्ध स्थापित करती है । सामाजिक विषमता एवं पूँजीवादी पुरूषों की कामुकता ही निम्न जाति के नारियों का जीवन दुःखदायक बना देती है । इन नारियों में जातीय संस्कार एवं परिवेश होने के बावजूद वे मानव मूल्यों की ओर लौटती है ।

राघवजी ने आलोच्य उपन्यासों की नारियों को सहानुभूती एवं मानवता की दृष्टि से देखा है । इन नारियों को सामाजिक मान्यताएँ, मर्यादाओं तथा नैतिकता के बन्धन से मुक्त कर दिया है । विवेच्य नारियों के शोषण के लिए समाज को ही कुसूरवार ठहराया है । शोषक समाज एवं पूँजीवाद से लड़ने के लिए इन नारियों को प्रेरित किया है । अतः आलोच्य नारियाँ अपने विशिष्ट जीवन-दर्शन, निर्भिकता, साहस के कारण हिंदी उपन्यास साहित्य में एक विशिष्ट स्थान बनाने में सफल रही हैं ।